Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 4, April - 2026

DOIs:10.2018/SS/202604001 --:-- Research Paper / Article / Review

'कम्बिलिकंटत्ते कलभरणीकल' आत्मकथा में अभिव्यक्त नारी अस्मिता

डॉ. सांटी जोसफ

सह आचार्या , हिंदी विभाग , संत अलोशियस महाविद्यालय , एडत्वा , अलप्पुषा , केरल।

E-mail : santyjoseph@aloysiuscollege.ac.in

सारांश : भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित एक राज्य केरल है। भारत के अन्य हिस्सों की तरह ,केरल में भी समाज में पुरुषों का ही प्रथम स्थान है। हालाँकि भारत में कुछ ऐसे राज्य हैं जहां लड़कियों के जन्म लेते ही उन्हें मार दिया जाता है ,लेकिन केरल में लड़कियों को कभी नहीं मारा जाता। इसके बावजूद समाज में महिलाओं को हमेशा दूसरा स्थान ही मिलता है। लेकिन लड़का पैदा न होने के कारण पति और उसके परिवारवाले हमेशा ताने देते रहते हैं। कुछ लोग तो यहां तक मानते है कि लड़का न होना किसी शाप की वजह से है । अगर उन्हें इसके पीछे का विज्ञान समझाया जाये ,तो वे उसे स्वीकार नहीं करते और न ही समझने की कोशिश करते हैं। भले ही महिला सशक्तिकरण की गतिविधियां आज बहुत सक्रीय हैं ,फिर भी परिवारों में आज भी पुरुषों का ही वर्चस्व बना हुआ है। आज की नारी आत्मविश्वास और सपनों से भरी हुई हैं। वह अपनी अस्मिता को पहचान रही हैं। लेकिन अक्सर ऐसा तब होता है जब वे प्रतिकूल परिस्थितियों या संकटों में फंसी होती हैं। इस आत्मकथा में हम एक ऐसी माँ को देखते हैं ,जो जिन्दगी भर पतिव्रता है ,जिसने दृढ़ निश्चय के साथ सभी कष्टों और दुखों का सामना करते हुए अपने चार बच्चों के भविष्य का निर्माण किया।

मुख्य शब्द : अकेला , कठिनाईयां , माँ , अस्मिता।

लेखक परिचय : '' कम्बिलिकंटत्ते कलभरणीकल '' मलयालम भाषा में लिखी गयी एक आत्माकथा है। रचनाकार बाबू अब्राहम का जन्म 1974 में केरल के इडुक्की ज़िले के कम्बिलिकंटम नामक एक छोटे से गांव में नंदीकुन्नेल मैरी और अब्राहम के पुत्र के रूप में हुआ था। उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया केंद्रीय विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में रैंक के साथ स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। 1999 वर्ष से वे फ्रांस में स्थायी रूप से रह रहे हैं। उन्होंने फ्रांस से मनोविज्ञान में एम् फिल और पि एच डी की उपाधि हासिल की और साथ ही फ्रेंच भाषा में मास्टर डिग्री भी प्राप्त की। 2003 से वे फ्रांस में एक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वर्तमान में ,वे फ्रांस में प्रबंधन विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर और समाज शास्त्र के शोधकर्ता के रूप में अपनी सेवाऐं दे रहे हैं।

1. प्रस्तावना : इन यादों की शुरुआत केरल के इडुक्की जिले के कम्बिलिकंटम नाम के एक छोटे से गांव से होती है। कहानीकार के माता –पिता (नंदीकुन्नेल मैरी और अब्राहम) के विवाह के एक वर्ष के बाद एक बच्ची का जन्म हुआ। लेकिन तीसरे ही दिन उस बच्ची की मृत्यु हो गयी। अगले वर्ष उन्होंने एक और बेटी को जन्म दिया। लेकिन ,जब वह बच्ची तीन साल की हुई ,तभी पिता अब्राहम अपनी पत्नी मैरी और बेटी लाली को अपने साथ घर लेकर आए। अगले ही वर्ष उन्होंने दूसरी बेटी जेसी को जन्म दिया बेटा न होने के कारण पति और सास ने मैरी को बहुत दोषी ठहराया और उन्हें कभी भला -बूरा कहा। जब बड़ी बहनों की उम्र 6 वर्ष (लाली) और 2 वर्ष (जेस्सी)थी ,तब अप्रैल को लेखक बाबू अब्राहम का जन्म हुआ। यह मानकर कि उसे शायद कभी बेटा नहीं होगा (और शायद हताशा में),मैरी ने वह प्रसव अस्पताल के बजाय घर पर ही किया। इसप्रकार मैरी ने पहली बार अपनी मानसिक दृढ़ता और साहस का परिचय दिया। ढाई साल बाद मैरी ने एक और बेटी (बिंदु)को जन्म दिया।

दोपहर तक खेत में काम करने के बाद ,जल्दी अमीर बनने की चाह में कहानीकार के पिता ताश खेलने कम्बिलिकंटम चले जाते थे। दूसरी ओर, मैरी पास के घरों ओर खेतों में निराई और कटाई के काम पर जाती थी और वहां से लौटकर अपने बच्चों

को खाना खिलाती थी। मैरी का दिहाड़ी मजदूरी पर जाना उसके पति और परिवारवालों को पसंद नहीं था,क्योंकि वह बहुत अभिमानी था। फिर भी ,अपने चार बच्चों का पेट भरने के लिए मां काम पर जाती रही। पिता ने सहकारी बैंक से कृषि ऋण लिया था। उसे चुका न पाने के कारण जब उन्हें पता चला कि बैंक अधिकारी कुरक्की के लिए आ रहे हैं ,तो पिता डरकर मलबार भाग गये। जाने से पहले ,जब उन्होंने अपनी बड़ी बेटी लाली से कहा कि वे मलबार जाकर पैसे कमाकर लौटेंगे ,तो यह सुनकर पास खड़ी,मैरी ने पहली बार अपने पति का विरोध किया और कहा -"आप यह क्या कह रहे हैं ?मैं इन बच्चों को लेकर अकेले क्या करूंगी ? " 1 वह आगे पूछती है कि " अगर आप ऐसे कहेंगे तो यह कैसे सही होगा ?मैं यह सारा कर्ज कैसे चुकाऊँगी ? एक औरत होकर ,मैं इस टूटे -फूटे घर में चार बच्चों की परवरिश कैसे करूंगी और कैसे जीऊँगी ? जब बैंक वाले कुर्की के लिए आएँगे ,तो में क्या करूंगी ? मेरे पास तो कण की एक छोटी सी बलि तक नहीं है ,फिर में यह सारा कर्ज कैसे चुकाऊँगी ? " 2

पिता के मलबार भाग जाने के कुछ ही महीनों बाद ,घर की कुर्की के लिए बैंक अधिकारी घर पहुंचे। माँ ने जल्द ही ब्याज चुकाने का वादा करके कुर्की की कार्यवाही को कुछ समय के लिए टलवा तो दिया ,लेकिन कर्ज चुकाने का कोई और रास्ता न होने के कारण ,उन्होंने अपने चारों बच्चों के साथ कल्लारकुट्टी बांध में कूदकर आत्महत्या करने का फैसला कर लिया। " मेरे बच्चों ,इस दुनिया में हमारा कोई नहीं है। माँ अब और हिम्मत नहीं जुटा पा रही है ,माँ अब तुम्हें और नहीं पाल पाएगी। इसलिए ,चलो हम अपनी जान दे देते हैं।"3 वह आगे कहती है कि " माँ अपने बच्चों को खुद उठाकर बाँध में नहीं फेंक सकती। जब माँ कूद जाए ,तब तुम बच्चे भी पीछे से कूद जाना। " 4 हालाँकि बच्चों की मासूम मुस्कराहट ने माँ को इस आत्मघाती कदम को उठाने से रोक दिया।

ईसाई धर्म के अनुसार ,अपने -अपने गिरिजा घर के पादरी का निर्णय ही सभी मामलों में अंतिम माना जाता है। माँ के परिवारवालों ,पिता के परिवारवालों और पादरी ने मिलकर यह निर्णय लिया था कि माँ बच्चों को पिता के घर छोट दे और खुद अपने भाई के घर लौट जाए। लेकिन माँ ने इस फैसले को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा " इस दुनिया में तुम में से कोइ भी मेरे या मेरे बच्चों के भविष्य का फैसला नहीं करेगा। "5 अब उनके भाई ने चेतावनी दी कि पादरी की आज्ञा न मानने पर शाप लगेगा ,तो माँ का जवाब था -" वह शाप मुझे और मेरे बच्चों को ही लगाने दो। मैं उसे खुशी -खुशी स्वीकार करती हूं । " 6 पादरी की आज्ञा न मानने के कारण जब दादाजी और पिता के भाईयों ने माँ को पीटने की कोशिश कि ,तब माँ ने अपनी कमर में खोंसी हुई हँसिया निकली और उसे लहराते हुए गरजकर कहा - "अब एक कदम भी आगे मत बढ़ना। मैं ने तुम में से किसी को भी मेरे या मेरे बच्चों के भविष्य का फैसला लेने का अधिकार नहीं दिया है। इसलिए ख़बरदार ,अगर आज के बाद कोई भी मेरे मामले में दखल देने इस रास्ते पर आया। मैं तुम्हें काट डालूंगी !" उस दिन मैं ने अपनी माँ को जिस रूप में देखा ,वह मेरे नारीत्व के संकल्पों की मातृदेवी बन गई। उनके द्वारा जलाए गए दीपों का प्रकाश आज भी नहीं बुझा है। वही प्रकाश आज भी मेरा मार्गदर्शन कर रहा है। "7

जब बाबू आठ साल का था ,तब उसकी माँ ने ,गरीबी के कारण उसे और उसकी दो बहनों को त्रिशूर के एक अनाथालय में भर्ती करा दिया। वहाँ का जीवन बहुत ही कष्टदायक था। अनाथालय में रहने के दौरान ,एक बार गिरजा घर गयी छोटी बहन बिंदु लापता हो गयी। दुःख के कारण ज़ोर -ज़ोर से रोने पर ,बाबू और उसकी दूसरी बहन लाली को अनाथालय की मालकिन ने छड़ी से बहुत पीटा। उस साल क्रिसमस की छुट्टियों में जब माँ आई ,तो उन्होंने अपने बच्चों के दुःख और कष्ट को समझा और अगले ही दिन स्कूल से बच्चों की टी. सी. लेकर उन्हें वापस घर ले गयी। बाबू और उसकी बहनें फिर से स्कूल जाने लगे। उन्होंने स्कूल में अच्छे अंकों के साथ परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

मार्च के महीने में ,दसवीं की परीक्षा के बाद ,वह *कोट्टयम की और चल पड़ा। उसने वहां कई होटलों में काम किया ,लेकिन हर जगह उसे केवल दुखों और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अंत में ,हार मानकर वह अपनी माँ के पास वापस लौट गया। उसे शक था कि माँ उसे स्वीकर करेगी या नहीं ,लेकिन अपने खोए हुए बेटे को वापस पाकर माँ ने उसे गले लगा लिया और प्यार किया। हालाँकि ,माँ की पहली प्रतिक्रिया एक जोरदार थप्पड़ थी। उन्होंने रोते हुए पुछा , " तुम्हें मेरे साथ ऐसा करने की हिम्मत कैसे हुई ? " 8 जब मई में परीक्षा का परिणाम आया ,तो उसे द्वितीय श्रेणी मिली। जहां सब लोग उसे ताने दे रहे थे और दोष दे रहे थे ,वहीं केवल उसकी माँ ही थी जिसने उसे पूरा सहारा दिया। माँ की प्रतिक्रिया यह थी कि " उसके लिए इतने अंक पर्याप्त हैं। अंक प्राप्त करने की चुनौतियां अभी और भी आएंगी। केवल स्कूल में अच्छे अंक लाना ही काफी नहीं है ,बल्कि जीवन में फर्स्ट क्लास (प्रथम श्रेणी) प्राप्त करना सबसे महत्वपूर्ण है। "9 माँ ने उसे सांत्वना देते हुए कहा।

जल्द ही कॉलेज में प्रवेश के लिए साक्षात्कार पत्र आ गया। लेकिन जानकारी के आभाव में ,प्रवेश के समय फीस न भर पाने के कारण उस कॉलेज में दाखिला नहीं मिला। उसने कुछ अन्य पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया ,लेकिन मन न लगने के कारण उन्हें

भी छोड़ दिया। वह अपनी माँ के साथ काम पर जाने लगा। जब वह बोझ ढोने का काम करता ,तब दोस्तों को आता देख बाबू शर्म के मारे पेड़ों के पीछे छिप जाता था। यह जानकर कि वह शर्मिंदगी के कारण छिप रहा है ,माँ ने उसे समझाया। माँ ने फिर से कहा ''कोइ भी काम करने में कोई बुराई या शर्म नहीं है। बस हमें दूसरों की कोई चीज़ नहीं चुरानी चाहिए। '' दूसरे हमारे बारे में क्या कहेंगे ,इस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। तुम्हारा नियंत्रण केवल एक ही चीज़ पर है -दुसरे चाहे जो भी कहें या करें तुम उस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हो ,इसका निर्णय केवल तुम ही कर सकते हो । "10 करीब एक साल तक बाबू अपनी माँ के साथ दिहाड़ी मजदूरी करता रहा। एक बार माँ ने एक घर की मरम्मत का ठेका लिया। जब वे उस काम के लिए बोरी सीमेंट लेने दूकान पर पहुंचे ,तो युनियनवालों ने उन्हें काम करने से रोक दिया। लेकिन माँ को यह मंजूर नहीं था। उन्होंने दो टूक से कहा "शहर में सामान गाड़ियों में लादने और उतारनेका अधिकार तुम्हारा है ,लेकिन सर पर बोझ उठाकर उसे काम की जगह तक पहुंचने की हमारे मामले में तुम दखल मत दो। तुम जो भी कहो ,में वही करूंगी जो मैं ने तय किया है। "इस पर यूनियनवालों ने माँ को पीटने की धमकी दी। बुरी तरह डर चुके बाबू ने माँ को पीछे हटनेकी कोशिश की ,लेकिन माँ ने उसे डांटते हुए कहा - "एक शब्द भी मत बोलना। तुम एक तरफ हट जाओ। अगर आज हम डरकर भाग गए ,तो कल ये हमारे घर में घुस आएँगे। इसका फैसला आज यहीं होना चाहिए। नंधिकुन्नेल मैरी नहीं जानती कि डर क्या होता है। किसी के डर से पीछे हट जाना मारे बस की बात नहीं । " 11 अपने विरोधियों की तरह माँ ने भी अपनी धोती ऊपर चढ़ाई और तौलिया सर पर बाँध लिया। उन्होंने ललकारते हुए कहा ,अगर यहां कोई ऐसा है जिसने अपनी माँ का दूध पिया हो ,तो मुझे रोक कर दिखाए। ' इसके बाद माँ ने बाबू को पास बुलाया। माँ और सरोजा दीदी ने मिलकर सीमेंट की एक बोरी बाबू के सिर पर रख दी। तभी यूनियन नेता ने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। आगबबूला होकर माँ ने उस नेता की गर्दन दबोच ली और उसके गाल पर एक ज़ोरदार तमाचा जड़ दिया। माँ ने गरजते हुए कहा , " मैं ने तुमसे कितनी शालीनता से कहा था कि मुझे और मेरी औरतों को मेहनत करके सम्मान से जीने दो। " 12 यह देखकर यूनियन नेता और उसके साथियों ने पीछे हट दिए। कहानीकार के गांव के कान्वेंट की दीवार बनाने का ठेका माँ को मिला। माँ के साथ बाबू भी काम पर गया। वहां छठी कक्षा में बाबू को पढानेवाली नन ने ,उसे पढ़ाई छोड़कर काम पर लगाने के लिए माँ को बहुत डांटा तब माँ का जवाब यह था : '' टीचर जी ,दसवीं कक्षा के बाद एक साल अच्छी तरह काम करके जीवन क्या है ,यह समझने के बाद ही उसका कॉलेज जाना बेहतर होगा। यह समय ही ऐसा है ;पैसा कमाने की कठिनाई और जीवन के संघर्षों को थोड़ा समझ लेने के बाद वह अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है।"13

माँ के साथ काम पर जाने के कुछ दिनों बाद ,एक रविवार को कथाकार के पिता के दो भाई और शरीर के सारे बाल झड़ जाने के कारण विकृत दिख रहा एक अन्य व्यक्ति घर आए। माँ के निर्देशानुसार बच्चे घर के अंदर चले गए। बहन ने बताया कि वह व्यक्ति उनके पिता हैं । लेकिन कथाकार उस मनुष्य को पिता के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं था। बारह साल पहले उन्हें छोड़कर चले गए पिता को वापस स्वीकार करने के लिए माँ ने कुछ शर्तें रखी "मुझे अपने पति को स्वीकार करने में कोइ आपत्ति नहीं है। लेकिन पिछले बारह वर्षों से मैं ने हर अपमान सहकर बहुत कठिनाईयों के साथ इन बच्चों को पाला है। इसलिए, मैं आगे भी काम पर (मजदूरी करने)जाती रहूँगी। अब से शाराब पीकर आकर मुझे गाली देना या मारना -पीटना नहीं चलेगा। अगर यह मंजूर है ,तो ही घर के अंदर कदम रखना। " 14 बारह वर्षों के अपमान की यादों के कारण,बाबू ने अपने पिता को स्वीकार करने के प्रति अपना विरोध माँ के सामने जाहिर किया। माँ ने अपने चारों बच्चों को गले लगाया और कहा -"बच्चों पिता जैसे भी हों ,मेरे लिए तो वो सुन्दर ही हैं। मुझे तुम चारों बच्चे मिले क्योंकि ये पिता सात थे ,इसलिए अगर मेरा उन्हें घर में रखना तुम्हें पसंद नहीं है ,तो तुम जा सकते हो। " 15 जब किसी ने कोई जवाब नहीं दिया ,तो माँ ने आगे कहा -" वह तुम्हारे पिता हैं। इससे पहले उन्होंने क्या किया ,वह सब भूल जाओ। रही बात रूप और सुंदरता की ,तो उन चीजों का कोई महत्व नहीं है । " 16 माँ का विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

पिताजी के वापस लौटने के बाद ,सबने मिलकर कड़ी मेहनत की। इसी बीच ,बड़ी बहन अपनी मर्जी से कान्वेंट में शामिल हो गयी। बाद में ,कथाकार ने सन्यास का मार्ग चुना। हालाँकि ,जब वह छुटियों में घर आया ,तो कथाकार ने देखा कि उनके पिता ने फिर से शराब पीना और माँ को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया है। यह देखकर उन्होंने सन्यासी जीवन त्याग दिया और घर लौट आए। इसके बाद उन्होंने पास के एक कॉलेज से प्री डिग्री की पढ़ाई की और विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस दौरान उन्हें कई दुखों और संघर्षों का सामना करना पड़ा।

बाद में, उन्होंने केरल के एक प्रसिद्ध महाविद्यालय से बी ,ए पास किया। उसके बाद दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया केंद्रीय विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में पोस्टग्रेडुएशन की डिग्री रैंक के साथ हासिल की। इस पूरी यात्रा के दौरान ,उन्हें समाज के उच्च वर्ग और अधिकारियों से बहुत उपेक्षा और अपमान साहनी पड़ी। लेकिन इन कठिन समय में हमेशा किसी न किसी ने उन्हें

सहारा दिया और उनकी मदद की। लेखक जब डिग्री की पढ़ाई कर रहे थे ,तब उनकी माताजी का इलाज कर रहे डाक्टर ने उनसे तुरंत मिलने के लिए कहा और उन्हें पता चला कि उनकी माँ को कैंसर है। इसके बाद ,माँ के इलाज और अन्य जरूरतों के लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। जब वे दिल्ली में अपना स्नातकोत्तर कर रहे थे ,तब अचानक उनकी नजर फ्रांस दूतावास के एक विज्ञान पर पड़ी। फ्रांस जाकर सोशल साइकोलॉजी पर शोध करने और उसकी रिपोर्ट फ्रेंच एम्बेसी में जमा करने के लिए अनुभवी लोगों से आवेदन मांग गए थे। इस प्रोजेक्ट की फीस फ्रेंच फ्रैंक (लगभग दो लाख रूपए)थे की गयी थी। बाबू ने सोचा कि यह राशि उसकी माँ के इलाज के काम आएगी ,इसलिए पर्याप्त योग्यता न होने के बावजूद उसने आवेदन कर दिया। जब वह इंटरव्यू के लिए गया ,तो उसे केवल इसलिए बुलाया गया था क्योंकि नियम के मुताबिक आवेदन करनेवाले सभी छात्रों का इंटरव्यू लेना अनिवार्य था। इंटरव्यू बोर्ड के सदस्यों ने उसे कोइ खास समर्थन नहीं दिया ,लेकिन बोर्ड में मौजूद मेरी फ्रांस गोनर्द नमक एक फ्रांसीसी महिला बाबू की बात सुनने के लिए तैयार हो गयी। बाबू ने कहा " अगर कोइ मुझे मौका ही नहीं देगा ,तो मुझे अनुभव कैसे मिलेगा ?मैं ने अपनी माँ के इलाज के लिए पैसे जुटाने के उदेश्य से ही इस प्रोजेक्ट के लिए आवेदन किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं फ्रांस जाकर इस काम को बखूबी पूरा करूंगा और आपको एक बेहतरीन रिपोर्ट सौपूँगा। आप मुझे बस डॉलर और विमान का टिकट दीजिये। अगर मेरे वापस आने पर आप मेरी रिपोर्ट से संतुष्ट नहीं हुए ,तो मुझे एक भी पैसा मत दीजिएगा। तब आप किसी अनुभवी व्यक्ति को इस शोध के लिए फिर से फ्रांस भेज सकते हैं आप ऐसा जोखिम उठाने से क्यों कतरा रहे हैं ?खोने के लिए कुछ भी नहीं है वाले भाव के साथ पूछे गए मेरे इस सवाल के सामने वह महिला कुछ देर के लिए निशब्द रह गयी। फिर उन्होंने कमिटी के अन्य सदस्यों की ओर देखकर मुस्कुराते हुए बाबू से कहा "डन"(सौदा मंजूर) 17 वे शब्द बाबू के जीवन में सफलता की ओर बढ़ता हुआ एक बड़ा कदम साबित हुए। बाकि साडी औपचारिकताएं और प्रक्रियाएं पूरी करने के बाद बाबू अपने गांव लौट आया। उसने अपनी माँ के साथ तीन दिन बिताये और फिर वापस दिल्ली पहुँच गया। अगले ही दिन वह फ्रांस के लिए विमान में सवार हो गया।

फ्रांस पहुंचने पर वहां से मिली कोलेट मैडम एक अटूट सहारा बनीं। वे परदेश में मिली एक और माँ के समान थी। जीवन की रह में कई चेहरे मिले और अच्छे -बुरे कई अनुभव भी हुए। जीवन के कड़वे अनुभवों से प्रेरणा और ऊर्जा लेकर वे एक ऊंचे मुकाम पर पहुँचे। इस पूरी यात्रा में उनकी प्यारी माँ ही उनकी सबसे बड़ी ताकत और सहारा बनीं। कथाकार बाबू को राह दिखानेवाली माँ के बोल :- " यदि तुम अपने चारो ओर पानी बढ़ता हुआ देखो ,तो यह जानते हुए भी कि तुम्हें तैरना नहीं आता, घबराकर चीखना -चिल्लाना मत। उस पानी के बहाव में यहाँ -वहाँ तैरते हुए लकड़ी के टुकड़ों को पकड़कर ऊपर चढ़ जाओ ओर पानी पर बस तैरते रहो। फिर लहरों के साथ बहती हुई टहनियों को जंगली लताओं से जोड़कर एक बेड़ा बनाओ। चप्पू चलाते समय तुम्हारे मन में उस खुशी का अहसास होना चाहिए जो किनारे पर पहुंचने पर मिलेगी। जब तुम किनारे पहुँच जाओ। तो उस बड़े को वापस पानी में धकेल देना ताकि वह किसी ओर के काम आ सके। जब कोई डूबता हुआ व्यक्ति उस बड़े के सहारे सुरक्षित किनारे पहुँचेगा ,तब तुम्हारे भीतर जो निस्वार्थ आनंद पैदा होगा वही तुम्हें जीवन भर रह दिखाना चाहिए।" 18

2. निष्कर्ष :

माँ स्नेह का ही दूसरा नाम है। माँ किसी भी परिस्थिति में अपने बच्चों को नहीं छोड़ती। जैसे कहा जाता है कि कौए को अपना बच्चा सबसे प्यारा होता है, वैसे ही माँ चाहे कितनी भी कठिनाईयाँ क्यों न सहनी पड़ें ,अपने बच्चों को पाल -पोसकर बड़ा करती है। उत्तराधुनिक युग में ,जहाँ हर कोई अपने सपनों और इच्छाओं के पीछे भाग रहा है और खून के रिश्ते तक भूलता जा रहा है ,वहाँ मैरी जैसी मातायें शायद बहुत कम हैं।

जब मैरी के पति ने उसे छोड़ दिया ,तो वह एक पल के लिए डगमगा गयी थी और उसने बच्चों के साथ आत्महत्या करने का निर्णय भी लिया था ,लेकिन वह उस विचार से पीछे हट गयी। उसने बड़ी बहादुरी से परिस्थितियों का सामना करने का दृढ़ निश्चय किया और परिवार को आगे बढ़ाया। तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए उसने अपने बच्चों को अपने से जोड़े रखा। जब समाज और परिवार के लोगों ने उसे दोषी ठहराया और अकेला कर दिया, तब भी उसने उसी तिरस्कार से अपनी शक्ति बटोरी और बच्चों के लिए सहारा और छाँव बनी। हाँ,मैरी अपनी अस्मिता को पहचान चुकी एक माँ ही है।

सन्दर्भ :

1. बाबू अब्राहम , कम्बिलिकंटत्ते कलभरणीकल , अगस्त 2025 ,मातृभूमि बुक्स ,कोषिकोडु ,केरल. पृष्ठ 28

2. वही ,पृष्ठ 28

3.वही ,पृष्ठ 32

4.वही ,पृष्ठ 32

5.वही ,पृष्ठ 35

6.वही ,पृष्ठ 36

7.वही ,पृष्ठ 36-37

8.वही ,पृष्ठ 142

9.वही ,पृष्ठ 143

10.वही ,पृष्ठ 146

11.वही ,पृष्ठ 147-148

12.वही ,पृष्ठ 148

13.वही ,पृष्ठ 149

14.वही ,पृष्ठ 150

15.वही ,पृष्ठ 151

16.वही ,पृष्ठ 151

17.वही ,पृष्ठ 190-191

18.वही ,पृष्ठ 145

*कम्बिलिकंटम - केरल का एक स्थान का नाम

* कलभरणीकल - एक प्रतीक के रूप में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह बाइबिल से सम्बंधित है। येसु मसीहा ने अपनी पहली आश्चर्यजनक घटना उस समय की ,जब उन्होंने अपनी माता मैरी के अनुरोध पर एक विवाह समारोह में घरवालों को अपमान से बचने के लिए बर्तनों को वाइन से भर दिया था।

*कोट्टयम -केरल का एक ज़िला है।